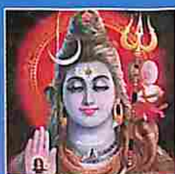
गुरु आराधनावली









मुनिवर सयन कीन्ही तब जाई। लगे चरण चापन दोउ भाई ॥

गुरु विश्वामित्र की सेवा में श्रीराम और लक्ष्मण

अनुक्रम

।। प्रार्थना ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ।।

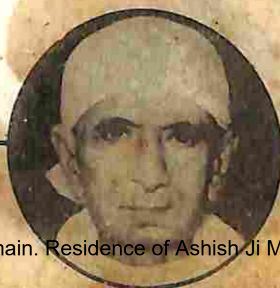
*

।। आरती ।।

ज्योत से ज्योत जगाओ...

ज्योत से ज्योत जगाओ सद्गुरु !
ज्योत से ज्योत जगाओ ।।







ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पू. लीलाशाहजी बापू

मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ सद्गुरु !
ज्योत से ज्योत जगाओ ॥

हे योगेश्वर ! हे परमेश्वर !
हे ज्ञानेश्वर ! हे सर्वेश्वर !
निज कृपा बरसाओ सद्गुरु !... ज्योत से०

हम बालक तेरे द्वार पे आये,
मंगल दरस दिखाओ सद्गुरु !... ज्योत से०

शीश झुकाय करें तेरी आरती,
प्रेमसुधा बरसाओ सद्गुरु !... ज्योत से०

साची ज्योत जगे जो हृदय में,
सोऽहं नाद जगाओ सद्गुरु !... ज्योत से०

अन्तर में युग युग से सोई,
चितिशक्ति को जगाओ सद्गुरु !... ज्योत से०

जीवन में श्रीराम अविनाशी,
चरनन शरण लगाओ सद्गुरु !... ज्योत से०



स्वामी मोहे ना विसारियो चाहे लाख लोग मिल जाय।
हम सम तुमको बहुत हैं तुम सम हमको नाँही ॥





पू. आसारामजी बापू

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

दीन दयाल को विनती सुन हो गरीब नवाज।
जो हम पूत कपूत हैं तो हे पिता तेरी लाज॥

*

॥ गुरुवन्दना ॥

जय सद्गुरु देवन देव वरं।
निज भक्तन रक्षण देह धरं।
पर दुःख हरं सुख शांति करं।
निरुपाधि निरामय दिव्य परं॥१॥
जय काल अबाधित शांतिमयं।
जन पोषक शोषक तापत्रयं।
भय भंजन देत परम अभयं।
मन रंजन भाविक भाव प्रियं॥२॥
ममतादिक दोष नशावत है।
शम आदिक भाव सिखावत है।
जग जीवन पाप निवारत है।
भवसागर पार उतारत है॥३॥
कहुँ धर्म बतावत ध्यान कहीं।
कहुँ भक्ति सिखावत ज्ञान कहीं।





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

गुरु नानक

उपदेशत नेम अरु प्रेम तुम्हीं ।
करते प्रभु योग अरु क्षेम तुम्हीं ।।४।।
मन इन्द्रिय जाही न जान सके ।
नहीं बुद्धि जिसे पहचान सके ।
नहीं शब्द जहाँ पर जाय सके ।
बिनु सद्गुरु कौन लखाय सके ।।५।।
नहीं ध्यान न ध्यातृ न ध्येय जहाँ ।
नहीं ज्ञातृ न ज्ञान न ज्ञेय जहाँ ।
नहीं देश न काल न वस्तु तहाँ ।
बिनु सद्गुरु को पहुँचाय वहाँ ।।६।।
नहीं रूप न लक्षण ही जिसका ।
नहीं नाम न धाम कहीं जिसका ।
नहीं सत्य असत्य कहाय सके ।
गुरुदेव ही ताही जनाय सके ।।७।।
गुरु कीन कृपा भव त्रास गई ।
मिट भूख गई छुट प्यास गई ।
नहीं काम रहा नहीं कर्म रहा ।
नहीं मृत्यु रहा नहीं जन्म रहा ।।८।।





आद्य शंकराचार्यजी

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भग राग गया हट द्वेष गया।
अघ चूर्ण भया अणु पूर्ण भया।
नहीं द्वैत रहा सम एक भया।
भ्रम भेद मिटा मम तोर गया ।।९।।

नहीं मैं नहीं तू नहीं अन्य रहा ।
गुरु शाश्वत आप अनन्य रहा ।
गुरु सेवत ते नर धन्य यहाँ।
तिनको नहीं दुःख यहाँ न वहाँ ।।१०।।

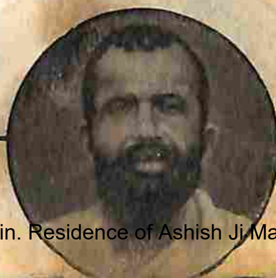
*

।। हाथ जोड़ वंदन करूँ ।।

हाथ जोड़ वंदन करूँ, धरूँ चरण पे शीश ।
ज्ञान भक्ति मोहे दीजिये, परम पुरुष जगदीश ।।१।।

सब कुछ दीना आपने, भेट धरूँ क्या नाथ ।
नमस्कार की भेट धरूँ, जोड़ूँ मैं दोनों हाथ ।।२।।

दुःख रूप संसार ये, जन्म मरण की खान ।
आप निकालो दया करो, सद्गुरु दीन दयाल ।।३।।


ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

रामकृष्ण परमहंस

प्रेम भक्ति देना हमें, हे प्रेमा अवतार!
हे करुणा अवतार!
तुम हो गगन के चंद्रमा, हम रहें अनुकूल ॥४॥
हरि हरि ॐ...



॥ बार बार वंदना ॥

भक्तों के भगवान को बार बार वंदना...
बार बार वंदना, हजार बार वंदना।
मेरे गुरुदेव को बार बार वंदना ॥१॥
राधा के श्याम को बार बार वंदना।
शबरी के राम को बार बार वंदना ॥२॥
बार बार वंदना, हजार बार वंदना।
मेरे गुरुदेव को बार बार वंदना ॥३॥
मीरा जैसी भक्ति हमें देना
शबरी जैसी प्रीति हमें देना
सद्गुरु अपनी भक्ति हमें देना ॥४॥
आपके चरणों में बार बार वंदना।
बार बार वंदना, हजार बार वंदना ॥५॥





स्वामी रामतीर्थ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तुम ही मेरे ब्रह्मा हो तुम ही मेरे विष्णु ।
तुम ही शिव शंकर हो गुरुदेवा ॥६॥
आपके चरणों में बार बार वंदना ।
मंगलमूर्ति को बार बार वंदना ।
बार बार वंदना हजार बार वंदना ॥७॥

*

॥ गुरु नाम सहारा मेरा है ॥

गुरुनाम सहारा मेरा है, गुरुनाम सहारा मेरा है...
मेरा और सहारा कोई नहीं... गुरुसेवा सहारा मेरा है ।
गुरुपूजा सहारा मेरा है... गुरुभक्ति सहारा मेरा है ।
गुरुमंत्र सहारा मेरा है... मेरा और सहारा कोई नहीं ॥
हरि ॐ... हरि ॐ...
हरिनाम सहारा मेरा है... गुरुकृपा सहारा मेरा है ।
भगवान सहारा मेरा है... मेरा और सहारा कोई नहीं ॥
हरि ॐ... हरि ॐ...
सद्गुरु तुम्हारी जय जय हो... गुरुनानक तुम्हारी जय जय हो ।
गुरुवाणी तुम्हारी जय जय हो... हरि ॐ... हरि ॐ...

*





 पू. आसारामजी बापू

॥ सद्‌गुरु का नाम ही प्यारा लागे ॥

मुझे सद्‌गुरु का नाम ही प्यारा लागे।
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे ॥१॥
साँई साँई नाम जपे है जो नर आठों याम।
उसके दुखड़े दूर करेंगे जय जय आसाराम ॥२॥
गुरुनाम में सफल जिंदगानी लागे।
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे ॥३॥
पार्वतीजी माता मेरी, पिता भोलेनाथ।
इन दोनों के चरणों में हो बारंबार प्रणाम ॥४॥
भोलेनाथ में सफल जिंदगानी लागे।
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे ॥५॥
सीता सीता नाम जपे है, जो नर आठों याम।
उसके दुखड़े दूर करे हैं, जय जय सीताराम ॥६॥
सीताराम में सफल जिंदगानी लागे।
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे ॥७॥
लक्ष्मी देवी माता मेरी, पिता आसाराम।
इन दोनों के चरणों में हो बारंबार प्रणाम ॥८॥





संत कबीर



ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इनकी पूजा में सफल जिंदगानी लागे।
मुझे झूठा ही झूठा ये संसार लागे ॥९॥

*

॥ गुरुदेव दया कर दो मुझ पर ॥

गुरुदेव दया कर दो मुझ पर,
मुझे अपनी शरण में रहने दो।
मुझे ज्ञान के सागर से स्वामी,
अब निर्मल गागर भरने दो ॥१॥
तुम्हारी शरण में जो कोई आया,
पार हुआ वो एक ही पल में।
इस दर पे हम भी आये हैं,
इस दर पे गुजारा करने दो ॥२॥
...मुझे ज्ञान के०
सर पे छाया घोर अंधेरा,
सूझत नाँही राह कोई।
ये नयन मेरे और ज्योत तेरी,
इन नयनों को भी बहने दो ॥३॥
...मुझे ज्ञान के०





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

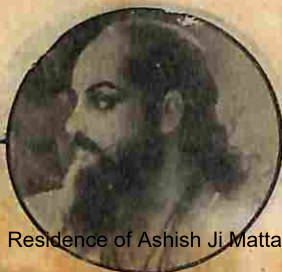
संत ज्ञानेश्वर

चाहे डुबा दो चाहे तैरा दो,
मर भी गये तो देंगे दुआएँ।
ये नाव मेरी और हाथ तेरे,
मुझे भवसागर से तरने दो ॥४॥
...मुझे ज्ञान के०

*

॥ अजन्मा है अमर आत्मा ॥

व्यर्थ चिन्तित हो रहे हो,
व्यर्थ डरकर रो रहे हो।
अजन्मा है अमर आत्मा,
भय में जीवन खो रहे हो ॥
जो हुआ अच्छा हुआ,
जो हो रहा अच्छा ही है।
होगा जो अच्छा ही होगा,
यह नियम सच्चा ही है ॥
गर भुला दो बोझ कल का,
आज तुम क्यों ढो रहे हो ?
अजन्मा है०


समर्थ रामदास

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

हुई भूली-भूलों का फिर,
आज पश्चात्ताप क्यों ?
कल क्या होगा ? अनिश्चित है,
आज फिर संताप क्यों ?
जुट पड़ो कर्त्तव्य में तुम,
बाट किसकी जो रहे हो ?
अजन्मा है०
क्या गया, तुम रो पड़े ?
तुम लाये क्या थे, खो दिया ?
है हुआ क्या नष्ट तुमने
ऐसा क्या था, खो दिया ?
व्यर्थ ग्लानि से भरा मन,
आँसुओं से धो रहे हो ।।
अजन्मा है०
ले के खाली हाथ आये,
जो लिया यहीं से लिया।
जो लिया नसीब से उसको,
जो दिया यहीं कर दिया।





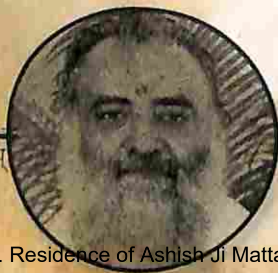
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

संत तुकाराम

जानकर दस्तूर जग का,
क्यों परेशां हो रहे हो?
अजन्मा है०

जो तुम्हारा आज है,
कल वो ही था किसी और का।
होगा परसों जाने किसका,
यह नियम सरकार का।
मग्न हो अपना समझना,
दुःखों को संजो रहे हो॥
अजन्मा है०

जिसको तुम मृत्यु समझते,
है वही जीवन तुम्हारा।
है नियम जग का बदलना,
क्या पराया क्या तुम्हारा?
एक क्षण में कंगाल हो,
क्षण भर में धन से मोह रहे हो।
अजन्मा है०


मेरा-तेरा, बड़ा-छोटा,
भेद ये मन से हटा दो।
सब तुम्हारे तुम सभी के,
फासले मन से हटा दो।
कितने जन्मों तक करोगे,
पाप कर तुम जो रहे हो॥
अजन्मा है०
है किराये का मकान,
ना तुम हो इसके, ना तुम्हारा।
पंच तत्त्वों का बना घर,
देह कुछ दिन का सहारा।
इस मकान में हो मुसाफिर,
किस कदर यों सो रहे हो ?
अजन्मा है०
उठो! अपने आपको,
भगवान को अर्पित करो।
अपनी चिन्ता, शोक और भय,
सब उसे अर्पित करो।





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

संत एकनाथ

है वो ही उत्तम सहारा,
क्यूं सहारा खो रहे हो ?
अजन्मा है०

जब करो जो भी करो,
अर्पण करो भगवान को।
सदा कर दो समर्पण,
त्यागकर अभिमान को।
मुक्ति का आनन्द अनुभव,
सर्वदा क्यों खो रहे हो ?
अजन्मा है०

*

।। नाम-कीर्तन महिमा ।।

सर्वधर्मबहिर्भूतः सर्वपापरतस्तथा ।
मुच्यते नात्र सन्देहो विष्णोर्नामानुकीर्तनात् ।।१।।

सर्वधर्मत्यागी और सर्वपापनिरत पुरुष भी यदि हरिनाम कीर्तन करता है तो वह पापों से छूट जाता है इसमें कोई सन्देह नहीं है। (१)





तीर्थानां च परं तीर्थं कृष्णनाम महर्षयः ।
तीर्थी कुर्वन्ति जगतीं गृहीतं कृष्णनाम यैः ॥२॥

हे ऋषियों ! समस्त तीर्थों में बड़ा तीर्थ कृष्णनाम है। जो लोग श्रीकृष्णनाम का उच्चारण करते हैं वे सम्पूर्ण जगत को तीर्थ बना देते हैं। (२)

सत्त्वशुद्धिकरं नाम नाम ज्ञानप्रदं स्मृतम् ।
मुमुक्षुणां मुक्तिप्रदं कामिनां सर्वकामदम् ॥३ ॥

सचमुच, हरि का नाम मनुष्यों की शुद्धि करनेवाला, ज्ञान प्रदान करनेवाला, मुमुक्षुओं को मुक्ति देनेवाला और इच्छुकों की सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण करनेवाला है। (३)

सर्वमंगलमांगल्यं आयुष्यं व्याधिनाशनम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं दिव्यं वासुदेवस्य कीर्तनम् ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण का कीर्तन सर्व प्रकार से मंगलकारी, आयुष्य के लिए शुभ, व्याधियों का नाश करनेवाला, भोग और मोक्ष प्रदान करे ऐसा दिव्य है। (४)

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात् ।
साधुदर्शनमात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत ॥५॥





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

स्वामी विवेकानंद

गीता के श्लोक के पठन से, श्रीकृष्ण के स्मरण और कीर्तन से तथा संत के दर्शन मात्र से करोड़ों तीर्थों का फल प्राप्त होता है। (५)



॥ जीवन की सार्थकता ॥

जिन्ह हरिकथा सुनी नहीं काना।
श्रवण रंध्र अहिभवन समाना ॥१॥
नयनन्हि संत दरस नहीं देखा।
लोचन मोरपंख कर लेखा ॥२॥
ते सिर कटु तुंबरि समतूला।
जे न नमत हरि गुरु पद मूला ॥३॥
जिन्ह हरिभगति हृदय नहीं आनी।
जीवत शव समान तेइ प्रानी ॥४॥
जो नहीं करइ राम गुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना ॥५॥
कुलिस कठोर निठुर सोई छाती।
सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥६॥







रमण महर्षि

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा।
दीप सिखा सोई परम प्रचंडा ॥७॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा।
तब भव मूल भेद भ्रम नासा ॥८॥

*

॥ परम सनेही संत ॥

स्वर्ग मृत्यु पाताल में पूर तीन सुख नाँहि ।
सुख साहिब के भजन में अरु संतन के माँहि ॥१॥
संतन ही में पाइये राम मिलन कौ घाट।
सहजैं ही खुलि जात है 'सुंदर' हृदय कपाट ॥२॥
संत मुक्ति के पोरिया तिनसों करिये प्यार।
कूँची उनके हाथ है 'सुंदर' खोलहि द्वार ॥३॥
'सुंदर' आये संत जन मुक्त करन को जीव।
सब अज्ञान मिटाइ करि करत जीव तैं शिव ॥४॥
संतन की सेवा किये हरि की सेवा होय।
तातैं 'सुंदर' एक ही मति करि जानै दोय ॥५॥





सहजो भज हरिनाम को छाँडी जगत का नेह।
अपना तो कोई है नहीं अपनी सगी न देह ॥६॥
पातक उपपातक महा जेते पातक और।
नाम लेत तत्काल सब जरत खरत तेहि ठौर ॥७॥
तिमिर गया रवि देखते कुमति गई गुरुज्ञान।
सुमति गई अति लोभ से भक्ति गई अभिमान ॥८॥
जैसी प्रीति कुटुम्ब की तैसी गुरु सों होय।
कहैं कबीर ता दास को पला न पकड़ै कोय ॥९॥
जो कोय निन्दे साधु को संकट आवै सोय।
नरक जाय जनमै मरै मुक्ति कबहुँ नहीं होय ॥१०॥
बहुत पसारा मत करो कर थोड़े की आस।
बहुत पसारा जिन किया तेई गये निराश ॥११॥
कपटी मित्र नं कीजिए पेट पैठि बुधि लेत।
आगे राह दिखाय के पीछे धक्का देत ॥१२॥
कोटि करम लागे रहै एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया जब आया अहंकार ॥१३॥
अपना तो कोई नहीं देखा ठोकि बजाय।
अपना अपना क्या करे मोह भरम लपटाय ॥१४॥





नरसिह मेहता

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

दीप कूँ झोला पवन है नर कूँ झोला नारि।
ज्ञानी झोला गर्व हैं कहैं कबीर पुकारि ॥१५॥
दोष पराया देखि करि चले हसन्त हसन्त।
अपना याद न आवई जा का आदि न अन्त ॥१६॥
लोभ मूल है दुःख को लोभ पाप को बाप।
लोभ फँसे जे मूढ़जन सहैं सदा संताप ॥१७॥
दरसन को तो साधु हो सुमिरन को गुरुनाम।
तरने को आधीनता डूबन को अभिमान ॥१८॥
सुख देवे दुःख को हरे करे पाप का अंत।
कह कबीर वे कब मिलें परम सनेही संत ॥१९॥
तीरथ नहाये एक फल संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनन्त फल कहे कबीर विचार ॥२०॥
आवत साधु न हरखिया जात न दीना रोय।
कहैं कबीर वा दास की मुक्ति कहाँ ते होय ॥२१॥
साधु मिले साहिब मिले अन्तर रही न रेख।
मनसा वाचा कर्मणा साधु साहिब एक ॥२२॥
कोटि कोटि तीरथ करै कोटि कोटि करु धाम।
जब लग साधु न सेवई तब लग काचा काम ॥२३॥







ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भक्तिमती मीराबाई

अड़सठ तीरथ जो फिरै कोटि यज्ञ व्रत दान।
'सुंदर' दरसन साधु कै तुलै नहीं कुछ आन ॥२४॥
मैं अपराधी जनम का नख सिख भरा विकार।
तुम दाता दुःख भंजना मेरी करो सँभार ॥२५॥
सुरति करो मेरे साँइया हम हैं भवजल माँहि।
आप ही बहि जाएँगे जो नहीं पकरो बाँही ॥२६॥

*

॥ संत मिलन को जाइये ॥

दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥ १ ॥

मनुष्य देह मिलना दुर्लभ है। वह मिल जाय फिर भी वह क्षणभंगुर है। ऐसे क्षणभंगुर मनुष्य देह में भी भगवान के प्रिय संतजनों का दर्शन तो उससे भी अधिक दुर्लभ है। (१)

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगीनां हृदये न वै ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ २ ॥

हे नारद ! कभी मैं वैकुण्ठ में भी नहीं रहता,





चैतन्य महाप्रभु

योगियों के हृदय का भी उल्लंघन कर जाता हूँ परन्तु जहाँ मेरे भक्त कीर्तन करते हैं वहाँ मैं अवश्य रहता हूँ। (२)

कबीर सोई दिन भला जा दिन साधु मिलाय ।
अंक भरै भरि भेटिये पाप शरीरां जाय ।।१।।
कबीर दरशन साधु के बड़े भाग दरशाय ।
जो होवै सूली सजा काटै ई टरी जाय ।।२।।
दरशन कीजै साधु का दिन में कई कई बार ।
आसोजा का मेह ज्यों बहुत करै उपकार ।।३।।
कई बार नहीं करि सकै दोय बखत करि लेय ।
कबीर साधू दरस ते काल दगा नहीं देय ।।४।।
दोय बखत नहीं करि सकै दिन में करु इक बार ।
कबीर साधु दरस ते उतरे भौ जल पार ।।५।।
दूजै दिन नहीं करि सकै तीजै दिन करु जाय ।
कबीर साधू दरस ते मोक्ष मुक्ति फल पाय ।।६।।
तीजै चौथै नहीं करै सातैं दिन करु जाय ।
या में विलंब न कीजिये कहै कबीर समुझाय ।।७।।

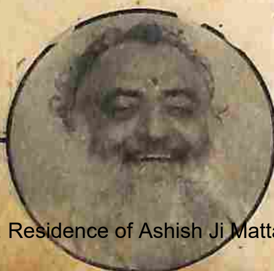




ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

साँई कँवरराम

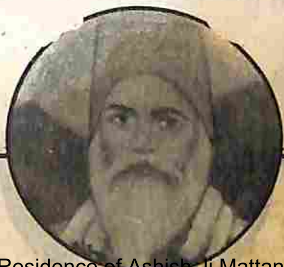
सातैं दिन नहीं करि सकै पाख पाख करि लेय।
कहे कबीर सो भक्तजन जनम सुफल करि लेय ॥८॥
पाख पाख नहीं करि सकै मास मास करु जाय।
ता में देर न लाइये कहै कबीर समुझाय ॥९॥
मात पिता सुत इस्तरी आलस बन्धु कानि।
साधु दरस को जब चलै ये अटकावै खानि ॥१०॥
इन अटकाया ना रहै साधू दरस को जाय।
कबीर सोई संत जन मोक्ष मुक्ति फल पाय ॥११॥
साधु चलत रो दीजिये कीजै अति सनमान।
कहै कबीर कछु भेंट धरुँ अपने बित अनुमान ॥१२॥
तरुवर सरोवर संतजन चौथा बरसे मेह।
परमारथ के कारणे चारों धरिया देह ॥१३॥
संत मिलन को जाइये तजी मोह माया अभिमान।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे कोटि यज्ञ समान ॥१४॥
तुलसी इस संसार में भाँति भाँति के लोग।
हिलिये मिलिये प्रेम सों नदी नाव संयोग ॥१५॥
चल स्वरूप जोबन सुचल चल वैभव चल देह।
चलाचली के वक्त में भलाभली कर लेह ॥१६॥


पू. आसारामजी बापू

ॐॐॐॐॐॐ

सुखी सुखी हम सब कहें सुखमय जानत नाँही ।
सुख स्वरूप आतम अमर जो जाने सुख पाँहि ॥१७॥
सुमिरन ऐसा कीजिये खरे निशाने चोट ।
मन ईश्वर में लीन हो हले न जिह्वा होठ ॥१८॥
दुनिया कहे मैं दुरंगी पल में पलटी जाऊँ ।
सुख में जो सोये रहे वा को दुःखी बनाऊँ ॥१९॥
माला श्वासोच्छ्वास की भगत जगत के बीच ।
जो फेरे सो गुरुमुखी ना फेरे सो नीच ॥२०॥
अरब खरब लों धन मिले उदय अस्त लों राज ।
तुलसी हरि के भजन बिन सबे नरक को साज ॥२१॥
साधु सेव जा घर नहीं सतगुरु पूजा नाँही ।
सो घर मरघट जानिये भूत बसै तेहि माँही ॥२२॥
निराकार निज रूप है प्रेम प्रीति सों सेव ।
जो चाहे आकार को साधू परतछ देव ॥२३॥
साधू आवत देखि के चरणौ लागौ धाय ।
क्या जानौ इस भेष में हरि आपै मिल जाय ॥२४॥
साधू आवत देख करि हसि हमारी देह ।
माथा का ग्रह उतरा नैनन बढ़ा सनेह ॥२५॥


ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

साँई टेऊँराम

श्रीमद् आद्य शंकराचार्यविरचितम्

॥ गुर्वष्टकम् ॥

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ १ ॥

यदि शरीर रूपवान हो, पत्नी भी रूपसी हो और सत्कीर्ति चारों दिशाओं में विस्तरित हो, मेरु पर्वत के तुल्य अपार धन हो, किन्तु गुरु के श्रीचरणों में यदि मन आसक्त न हो तो इन सारी उपलब्धियों से क्या लाभ ?

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं
गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ २ ॥

सुन्दरी पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र, घर एवं स्वजन आदि प्रारब्ध से सर्व सुलभ हो किन्तु गुरु के श्रीचरणों में मन







की आसक्ति न हो तो इस प्रारब्ध-सुख से क्या लाभ ?

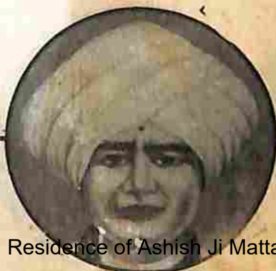
षडंगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ३ ॥

वेद एवं षट्वेदांगादि शास्त्र जिन्हें कंठस्थ हों, जिनमें सुन्दर काव्य-निर्माण की प्रतिभा हो, किन्तु उसका मन यदि गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इन सद्गुणों से क्या लाभ ?

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ४ ॥

जिन्हें विदेशों में समादर मिलता हो, अपने देश में जिनका नित्य जय-जयकार से स्वागत किया जाता हो और जो सदाचारपालन में भी अनन्य स्थान रखता हो, यदि उसका भी मन गुरु के श्रीचरणों के प्रति अनासक्त हो तो इन सद्गुणों से क्या लाभ ?







ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्री जलाराम बापा

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः

सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ५ ॥

जिन महानुभाव के चरणकमल पृथ्वीमण्डल के राजा-महाराजाओं से नित्य पूजित रहा करते हों, किन्तु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों में आसक्त न हो तो इस सद्भाग्य से क्या लाभ ?

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्

जगद्वस्तु सर्वं करे सत्प्रसादात् ।

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ६ ॥

दानवृत्ति के प्रताप से जिनकी कीर्ति दिग्दिगान्तरों में व्याप्त हो, अति उदार गुरु की सहज कृपादृष्टि से जिन्हें संसार के सारे सुख-ऐश्वर्य हस्तगत हों, किन्तु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों में आसक्तिभाव न रखता हो तो इन सारे ऐश्वर्यों से क्या लाभ ?







सॉईबाबा

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ७ ॥

जिनका मन भोग, योग, अश्व, राज्य, स्त्रीसुख और धनोपभोग से कभी विचलित न हुआ हो, फिर भी गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न बन पाया हो तो मन की इस अटलता से क्या लाभ ?

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्ध्ये ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ८ ॥

जिनका मन वन या अपने विशाल भवन में, अपने कार्य या शरीर में तथा अमूल्य भंडार में आसक्त न हो, पर गुरु के श्रीचरणों में भी यदि वह मन आसक्त न हो पाये तो उसकी सारी अनासक्तियों का क्या लाभ?

अनर्घ्याणि रत्नादि मुक्तानि सम्यक्
समालिंगिता कामिनी यामिनीषु ।





पू. आसारामजी बापू

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ ९ ॥

अमूल्य मणि-मुक्तादि रत्न उपलब्ध हों, रात्रि में समालिंगिता विलासिनी पत्नी भी प्राप्त हो, फिर भी मन गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न बन पाये तो इन सारे ऐश्वर्य-भोगादि सुखों से क्या लाभ ?

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेत् वांछितार्थ पदं ब्रह्मसंज्ञं
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥ १० ॥

जो यती, राजा, ब्रह्मचारी एवं गृहस्थ इस गुरुअष्टक का पठन-पाठन करता है और जिसका मन गुरु के वचन में आसक्त है, वह पुण्यशाली शरीरधारी अपने इच्छितार्थ एवं ब्रह्मपद इन दोनों को सम्प्राप्त कर लेता है यह निश्चित है ।









भक्तिमती शबरी

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

।। हम भारत देश के वासी हैं ।।

हम भारत देश के वासी हैं, हम ऋषियों की संतानें हैं।
हम जगद्गुरु के बालक हैं, हम परम गुरु के बच्चे हैं ।।१।।
हम देवभूमि के वासी हैं, हम सोहं नाद जगायेंगे।
हम शिवोहं शिवोहं गायेंगे, हम नयी चेतना लायेंगे ।।२।।
हम भारत देश के०

हम संयमी जीवन जियेंगे, हम भारत महान बनायेंगे।
हम प्रभु के गीत गायेंगे, हम दिव्य शक्ति बढ़ायेंगे ।।३।।
हम भारत देश के०

हम भारतभर में घूमेंगे, हम गुरु संदेश सुनायेंगे।
हम आत्म-जागृति पायेंगे, हम नयी रोशनी लायेंगे ।।४।।
हम भारत देश के०

हम गुरु का ज्ञान पचायेंगे, हम बड़भागी हो जायेंगे।
हम जीवन्मुक्ति पायेंगे, हम गुरु की शान बढ़ायेंगे ।।५।।
हम भारत देश के०









ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सहजानंद स्वामी

।। गुरुवार भजन ।।

आज तो गुरुवार है, सद्गुरुजी का वार है।
गुरुभक्ति का पी लो प्याला, पल में बेड़ा पार है ।।१।।
गुरुचरणों का ध्यान लगाओ, निर्मल मन हो जायेगा।
तन मन धन गुरु चरण चढ़ाकर, विनती बारंबार है ।।२।।
प्रभु को भूल गये ओ प्यारे! माया में लिपटाए हो।
पूर्व पुण्य से नर तन पाया, मिले न बारंबार है ।।३।।
गुरुभक्ति से प्रभु मिलेंगे, बिन गुरु गोता खायेगा।
भवसागर में डूबी नैया, सद्गुरु तारणहार हैं ।।४।।
गुरु आसारामजी ज्ञान के दाता, भक्तों का कल्याण करो।
निर्मोही बलिहारं है, अर्जी बारंबार है ।।५।।

।। दोहे ।।

संत मिलन को जाइये, तजी मोह माया अभिमान।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे, कोटि यज्ञ समान ।।१।।
सुखी सुखी हम सब कहें, सुखमय जानत नाँही।
सुखस्वरूप आतम अमर, जो जाने सुख पाँहि ।।२।।





महावीर स्वामी

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सद्गुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट ॥३॥
देखा अपने आपको, मेरा दिल दीवाना हो गया।
ना छेड़ो मुझे यारों, मैं खुद पे मस्ताना हो गया ॥४॥
बहुत पसारा मत करो, कर थोड़े की आस।
बहुत पसारा जिन किया, वे भी गये निराश ॥५॥
चतुराई चुल्हे पड़ी, पूर पड़्यो आचार।
तुलसी हरि के भजन बिन चारों वर्ण चमार ॥६॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, हरे कोटि अपराध ॥७॥
सत्संग सेवा साधना, सत्पुरुषों का संग।
ये चारों करते तुरंत, मोह निशा का भंग ॥८॥
यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शिर दीजे सद्गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ॥९॥
कबीरा यह तन जात है, राख सके तो राख।
खाली हाथों वे गये, जिन्हें करोड़ों और लाख ॥१०॥
सब घट मेरा साँइया, खाली घट ना कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट प्रकट होय ॥११॥



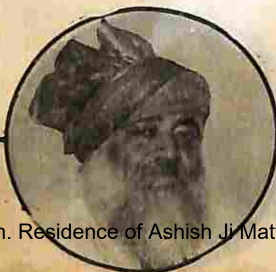


ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भगवान बुद्ध

कबीरा कूआँ एक है, पनिहारी अनेक।
न्यारे न्यारे बर्तनों में, पानी एक का एक ॥१२॥
तुलसी जग में यूँ रहो, ज्यों रसना मुख माँही।
खाती घी और तेल नित, तो भी चिकनी नाँही ॥१३॥
पानी केरा बुलबुला, यह मानव की जात।
देखत ही छुप जात है, जो तारा प्रभात ॥१४॥
संगी साथी चल गये सारे, कोई न निभियो साथ।
कह नानक इह बिपत में, साथ एक रघुनाथ ॥१५॥
फिरत फिरत प्रभु आइयो, परियो तव शरणाय।
नानक की प्रभु विनती, अपनी भक्ति लाय ॥१६॥
चिंता ऐसी डाकिनी, काटी कलेजा खाय।
वैद्य बिचारा क्या करे, कहाँ तक दवा खिलाय ॥१७॥
एक भूला दूजा भूला, भूला सब संसार।
बिन भूला एक गोरखा, जिसको गुरु का आधार ॥१८॥
तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार ॥१९॥




।। सद्गुरु ।।

साथी सगे सब स्वार्थ के हैं, स्वार्थ का संसार है।
निःस्वार्थ सद्गुरु देव हैं, सच्चा वही हितकार है।।१।।
ईश्वर कृपा होवे तभी, सद्गुरु कृपा जब होय है।
सद्गुरु कृपा बिनु ईश भी, नहीं मैल मन का धोय है।।२।।
निर्जीव सारे शास्त्र सच्चा, मार्ग ही दिखलायँ हैं।
दृढ़ ग्रन्थि चिज्जड़ खोलने की, युक्ति नहीं बतलायँ हैं।।३।।
निस्संग होने के सबब से, ईश भी रुक जाय है।
गुरु गाँठ खोलन रीति तो, गुरुदेव ही बतलाय है।।४।।
गुरुदेव अद्भुत रूप, हैं परधाम माँहि विराजते ।
उपदेश देने सत्य का, इस लोक में आजावते।।५।।
दुर्गम्य का अनुभव करा, भय से परे ले जावते।
पर धाम में पहुँचाय कर, स्वराज्य पद दिलवायते।।६।।
छुड़वाय कर सब कामना, कर देय हैं निष्कामना।
सब कामनाओं का बता घर, पूर्ण करते कामना।।७।।
मिथ्या विषय सुख से हटा, सुख सिन्धु देते हैं बता।
सुख सिन्धु जल से पूर्ण, अपना आप देते हैं जता।।८।।





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वीर हनुमान

तनु, इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि सब सम्बन्ध छुड़वा देय हैं।
अणु को बृहत करि सूर्य ज्यों, जग माँहि चमका देय है ॥९॥
आधार सारे विश्व का, सब का हि जो अध्यक्ष है।
सो ही बनाते जीव को, ब्रह्माण्ड जिसका साक्ष्य है ॥१०॥
इक तुच्छ वस्तु छीन कर, आपत्तियाँ सब मेट कर।
प्याला पिलाकर अमृत का, मर को बनाते हैं अमर ॥११॥
सब भाँति से कृतकृत्य कर, परतंत्र को निज तंत्र कर।
अधिपति रहित देते बना, भय से छुटा करते निडर ॥१२॥
कंचन बनाते देह को, रज, मैल सब हर लेय हैं।
ले काँच कच्चा हाथ से कौस्तुभमणि दे देय हैं ॥१३॥
इस लोक से, परलोक से, सब कर्म से, सब धर्म से।
पर तत्त्व में पहुँचाय कर, ऊँचा करे हैं सर्व से ॥१४॥
सद्गुरु जिसे मिल जायें, सो ही धन्य है जग मन्य है।
सुर सिद्ध उसको पूजते, ता सम न कोऊ अन्य है ॥१५॥
अधिकारी हो गुरु देव से, उपदेश जो नर पाय है।
भोला! तरे संसार से, नहीं गर्भ में फिर आय है ॥१६॥









गुरु दत्तात्रेय

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ निगुरे नहीं रहना ॥

सुन लो चतुर सुजान निगुरे नहीं रहना...
निगुरे का नहीं कहीं ठिकाना चौरासी में आना जाना।
पड़े नरक की खान निगुरे नहीं रहना...
गुरु बिन माला क्या सटकावे मनवा चहुँ दिश फिरता जावे।
यम का बने मेहमान निगुरे नहीं रहना...
सुन लो०
हीरा जैसी सुन्दर काया हरि भजन बिन जनम गँवाया।
कैसे हो कल्याण निगुरे नहीं रहना...
सुन लो०
निगुरा होता हिय का अन्धा खूब करे संसार का धन्धा।
क्यों करता अभिमान निगुरे नहीं रहना...
सुन लो०



॥ हे प्रभु ! आनंददाता ॥

हे प्रभु ! आनंददाता। ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये॥







ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

गणपति

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें॥
हे प्रभु०

निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें।
ईर्ष्या किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें॥
हे प्रभु०

सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें।
दिव्य जीव हो हमारा यश तेरा गाया करें॥
हे प्रभु०

जाए हमारी आयु हे प्रभु लोक के उपकार में।
हाथ डालें हम कभी न भूलकर अपकार में॥
हे प्रभु०

मातृभूमि मातृसेवा हो अधिक प्यारी हमें।
देश में सेवा मिले निज देश हितकारी बनें॥
हे प्रभु०

कीजिये हम पर कृपा ऐसी हे परमात्मा।
मोह मद मत्सर रहित होवे हमारी आत्मा॥
हे प्रभु०





भगवान शंकर

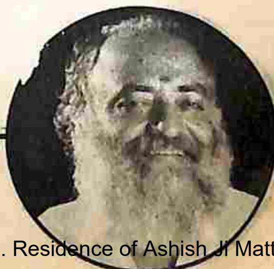
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रेम से हम गुरुजनों की नित्य ही सेवा करें।
प्रेम से हम दुःखीजनों की नित्य ही सेवा करें॥
हे प्रभु०



॥ नानक वाणी ॥

संगी साथी चल गये सारे कोई न निभयो साथ।
कह नानक इह बिपत में टेक एक रघुनाथ ॥१॥
गिआनु अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु।
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥२॥
हरि सजणु गुरु सेवदा गुरु करणी परधानु।
नानक नामु व वीसरे करमि सचै नीसणु ॥३॥
बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिनि माणस ते देवते करत न लागी बार ॥४॥
वाहिगुरु नाम जहाज है जो चढ़े सो उतरे पार।
जो श्रद्धा कर सेवंदे नानक पार उतार ॥५॥
गुरु की मूर्त मन में ध्यान गुरु के शब्द मंत्र मन मान।
गुरु के चरण हृदय ले धारो गुरु पारब्रह्म सदा नमस्कारो ॥६॥


ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पू. आसारामजी बापू

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।
कहु नानक तिह भजु मना भउनिधि उतरहि पारि ॥७॥
भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु।
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥८॥
जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु।
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥९॥
जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु।
कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥१०॥
जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोई।
कहु नानक सुन रे मना हरि भावै सो होई ॥११॥
जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु।
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥१२॥
तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु।
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥१३॥
जग रचना सब झूठ है जानि लेहू रे मीत।
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीत ॥१४॥
रामु गइओ रावनु गइयो जा कउ बहु परिवारु।
कहु नानक थिर कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥१५॥





भगवान विष्णु

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

चिंता ता की कीजिए जो अनहोनी होई।
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोई ॥१६॥
संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि।
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥१७॥
लालच झूठ बिकार मोह बिआपत भूडे अंध।
लागि परे दुरगंध सिउ नानक भाइआ बंध ॥१८॥
तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभु मिलावै मोहि।
नानक भ्रम भउ काटिये चुके जमकी जोह ॥१९॥
पति राखी गुरि पारब्रह्म तजि परपंच मोह विकार।
नानक सोऊ आराधीए अंतु न पारावारु ॥२०॥
आए प्रभ सरनागति किरपा निधि दइआल।
एक अखरु हरि मानि बसत नानक होत निहाल ॥२१॥
देनहार प्रभु छोडि कै लागहि आन सुआइ।
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥२२॥
उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार।
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥२३॥
करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोई।
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि मही अली सोई ॥२४॥





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सूर्यनारायण

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ।
संत की निन्दा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥२५॥
सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ।
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥२६॥
रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिह गुण ते प्रभ भिंन ।
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥२७॥
सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ।
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥२८॥
फिरत फिरत प्रभु आइया परिआ तउ सरनाइ ।
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥२९॥
गुन गोबिंद गाओ नही जनमु अकारथ कीनु ।
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥३०॥
तरनापो इउ ही गइयो लीओ जरा तनु जीति ।
कहु नानक हरि भजु मन अउध जातु है बीति ॥३१॥
धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ।
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥३२॥
पतित उधारन भै हरण हरि अनाथ के नाथ ।
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥३३॥





अंबाजी

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोई ।
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होई ॥३४॥
जिह सिमरत गति पाइऐ तिह भजु रे तै मीत ।
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥३५॥
पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ।
जिह ते उपजिओ नानका लीन चाहि मै मानु ॥३६॥
सुखु दुखु जिह परसै नहीं लोभ मोह अभिमानु ।
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥३७॥
उसतति निन्दा नाहि जिहि कंचन लोह समानि ।
कहु नानक सुनु रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥३८॥
हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ।
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥३९॥
जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइयो उदासु ।
कहु नानक सुन रे मना तिह घटि ब्रह्म निवासु ॥४०॥
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ।
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥४१॥
जिउ सुपना अरु पेखना नाटक ऐसे जग कउ जानि ।
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥४२॥





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भगवान श्रीकृष्ण

निसि दिन माइआ कारने प्रानी डोलत नीत।
कोटन मै नानक कोऊ नाराइन जिह चिति ॥४३॥
जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥४४॥
प्रानी कछु न चेतई मदि माइआ के अंधु।
कह नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥४५॥
जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह।
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुष देह ॥४६॥
माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान।
कहु नानक बिनु हरि भजन, बिरथा जनमु सिरान ॥४७॥
जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु।
हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४८॥
मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसारियो गोबिंद नामु।
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउ ने काम ॥४९॥
सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोई।
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होई ॥५०॥
दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ।
सरणि तुमारी आइयो नानक के प्रभ साथ ॥५१॥





काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाई अहंमेव।
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरुदेव ॥५२॥

*

गुरु समीप पुनि करियो बासा, जो अति उत्कट ह्वे जिज्ञासा।
गुरु मूरति को हियमें ध्याना धारै जो चाहे कल्याना ॥१॥
मन की जानै सब गुरु, कहाँ छिपावै अंध।
सद्गुरु सेवा कीजिये, सब कट जावे फंद ॥२॥
– **निश्चलदासजी ('विचारसागर')**

*

वेद उदधि बिन गुरु लखे लागे लौन समान।
बादल गुरु मुख द्वार है अमृत से अधिकान॥

*

॥ इस योग्य हम कहाँ हैं ॥

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुरुवर तुझे रिझायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये ॥
जब से जनम लिया है, विषयों ने हमको घेरा।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा॥





ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बालयोगी नारायण स्वामी

सद्बुद्धि को अहम ने हरदम रखा दबाये ॥
इस योग्य०

निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं।
तेरा ध्यान जब लगायें, माया पुकारती है।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये ॥
इस योग्य०

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है।
इक दूसरे के सुख में खुद को बड़ी जलन है ॥
कर्मों का लेखा जोखा कोई समझ न पाये ॥
इस योग्य०

जब कुछ न कर सके तो, तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं झेलेंगे सब सजायें ॥
बस दरश तू दिखा दे, कुछ और हम न चाहें ॥
इस योग्य०









भगवान श्रीराम

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

।। हमें गुरुदेव तेरा सहारा ।।

हमें गुरुदेव तेरा सहारा न मिलता।
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता।।

साँसों की सरगम मध्यम हुई थी।
जीने की आशा भी धूमिल हुई थी।
तेरे नाम का जो सहारा न मिलता।
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता।।
रिश्तों की चौखट पे ठोकर है खाई।
अपने परायों की समझ भी न आई।
सच्चा जो तेरा रिश्ता न मिलता।
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता।।
किस्मत की मौजों ने कश्ती डुबोयी।
जब सब लुटा तो तेरी याद आई।
अगर मेरी किश्ती को सहारा न मिलता।
ये जीवन हमारा दुबारा न खिलता।।









ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

विद्यादेवी सरस्वती

ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥



ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

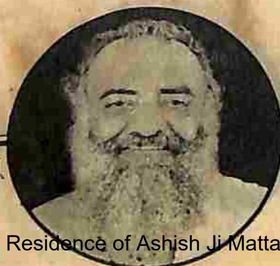


※ प्रकाशक ※

श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अमदावाद-5. फोन : २७५०५०१०-११.
वरियाव रोड, जहाँगीरपुरा, सूरत-395005. फान : (0261)2772201-2.
वन्दे मातरम् रोड, रवीन्द्र रंगशाला के सामने,
नई दिल्ली-60. फोन : (011)25729338, 25764161.
e-mail : ashramindia@ashram.org web-site : www.ashram.org

Rs. 2-50







पू. आसारामजी बापू

ॐॐॐॐॐॐॐ

पूज्य बापूजी के सत्साहित्य का सूचीपत्र

क्रमांक	साहित्य का नाम	हिन्दी रु.	गुजराती रु.	मराठी रु.	सिंधी रु.	अंग्रेजी रु.	पंजाबी रु.	तेलुगू रु.	उड़िया रु.	नेपाली रु.	कन्नड रु.
१	श्रीगुरुगीता	४	४	६	५	७	-	४	५	-	४
२	व्यासपूर्णिमा	५	५	५	-	-	-	५	-	-	६
३	ईश्वर की ओर	४	४	४	५	७	४	५	४	५	४
४	महान नारी	४	४	४	-	-	४	४	४	-	४.५
५	यौवन सुरक्षा	४	४	४	-	५	-	५	४	५	४
६	निर्भय नाद	२	३	२	-	३	२	२	२.५	-	२
७	योगासन	३	३	३	३	-	-	४	३	३	३
८	जीवन रसायन (म.)	६	६	६	-	६	३	-	४	-	-
९	इष्टसिद्धि	४	४	४	-	-	-	४	४	-	४
१०	मन को सीख	२	२	२	-	-	-	२	२	-	२
११	अवतारलीला	२	२	-	२	-	-	२	-	-	-
१२	पुरुषार्थ परमदेव	२	२	२	-	-	-	२	२.१	-	-
१३	मङ्गलमय जीवन...	२.५०	२	३	४	३	-	-	२	-	२
१४	नशे से सावधान	२	२	२	-	-	-	२.५	२.५	-	२
१५	श्रीआसारामायण	१	१	१	०.५	१	-	०.५	१	१	१
१६	श्रीब्रह्मरामायण	२	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१७	भजनामृत	२	१	-	-	-	-	-	-	-	-
१८	गुरुभक्तियोग	१०	८	९	-	-	-	८	-	-	८
१९	जीवन विकास	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
२०	तू गुलाब होकर...	४	४	४	-	-	-	७	४	-	४
२१	प्रभु ! परम प्रकाश...	२	२	२	-	-	-	-	३	-	२
२२	सामर्थ्य-स्रोत	७	७	८	-	-	-	८	-	-	-
२३	मधुर व्यवहार	१	१	१	३	-	-	-	१	-	-
२४	जो जागत है...	२	२	२	-	-	-	२	२	-	-
२५	योगलीला (सचित्र)	१६	१६	-	-	२०	-	-	-	-	-
२६	श्रीकृष्ण दर्शन	७	७	-	-	-	-	-	-	-	-
२७	प्रसाद	२	२	२	-	३	-	-	२	-	-
२८	दैवी संपदा	८	८	-	-	-	-	-	-	-	-
२९	आत्मगुंजन	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-
३०	परम तप	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
३१	आत्मयोग	५	५	५	-	४	-	५	-	-	५
३२	साधना में सफलता	८	९	८	-	-	-	९	-	-	-
३३	मुक्ति का सहज मार्ग	९	७	९	-	-	-	-	-	-	९
३४	समता साम्राज्य	१२	८	१२	-	-	-	११	-	-	-
३५	अनन्य योग	४	५	५	-	-	-	५	-	-	-
३६	श्रीगुरुगीता(पॉ.)	२	२	२	-	-	-	-	-	-	-
३७	ऋषि प्रसाद	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
३८	अलख की ओर	५	४	६	-	-	-	५	-	-	-
३९	जीते जी मुक्ति	७	६	७	-	-	-	६	-	-	-
४०	सहज साधना	५	४	५	-	-	-	-	-	-	-
४१	जीवन झाँकी	२	२	२	२	२	-	२	२	-	-
४२	जीवन झाँकी (दव.)	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
४३	निश्चिंत जीवन	६	६	६	-	-	६	-	-	-	-
४४	सदा दिवाली	२	२	२	-	-	-	-	२	-	-
४५	श्रीमद्भगवद्गीता	१०	१५	१०	-	-	-	-	२०	-	-
४६	पंचामृत	२०	२०	२०	-	-	-	-	२०	-	-
४७	शीघ्र ईश्वरप्राप्ति	८	८	९	-	-	-	-	-	-	९
४८	सच्चा सुख	६	६	६	-	-	-	७	-	-	-
४९	श्रीकृष्णावतार दर्शन	८	८	८	-	-	-	८	-	-	-
५०	आरोग्यनिधि	१३	१३	१३	१२	-	-	१२	-	-	१२

क्रमांक	साहित्य का नाम	हिन्दी रु.	गुजराती रु.	मराठी रु.	सिंधी रु.	अंग्रेजी रु.	पंजाबी रु.	तेलुगू रु.	उड़िया रु.	नेपाली रु.	कन्नड रु.
५१	सत्संग सुमन	११	११	-	-	-	-	१२	-	-	-
५२	ज्ञानधारा (कैसे)	१५	१५	१५	-	-	-	-	१५	=	-
५३	आंतर ज्योत	३	३	३	-	-	-	-	-	-	-
५४	स्वास्थ्य सम्राट	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
५५	जेम्स फ्रोम बापू	-	-	-	-	१	-	-	-	-	-
५६	संसार में भी सुखी	-	-	-	३	-	-	-	-	-	-
५७	आंतरयी कुंजी	-	-	-	३	-	-	-	-	-	-
५८	दरवेश दर्शन	-	-	-	३	-	-	-	-	-	-
५९	संत अईं मईंअ नबाब	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
६०	गुरु आराधनावली	२५	२.५	-	-	-	-	-	२.५	-	-
६१	सत्संगसरिता	१०	१०	१०	-	-	-	-	-	-	-
६२	गीता प्रसाद	१०	१०	१०	-	-	-	१२	-	-	-
६३	जीवन सौरभ	२०	२०	-	-	-	-	-	-	-	-
६४	ब्रह्मबावनी	-	२	-	-	-	-	-	-	-	-
६५	मंत्रजाप-महिमा...	६	६	६	-	-	-	६	-	-	६
६६	नूरानी नूर	-	-	-	२	-	-	-	-	-	-
६७	श्रीगुरुरामायण	३	३	३	-	-	-	-	-	-	-
६८	श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्र	३	३	३	-	-	-	-	-	-	-
६९	योगयात्रा-४	२.५	२.५	२.५	-	-	-	३.५	३	-	३.५
७०	श्राद्ध-महिमा	२	२	२	-	-	-	-	३	-	३
७१	युवाधन सुरक्षा	६.५	६.५	६.५	-	-	-	-	७.५	-	-
७२	यौवन सुरक्षा-२	२	२	२	-	-	-	४	३	-	-
७३	संत अवतरण (बड़ी)	१०	१०	१०	-	११	-	-	-	-	-
७४	संत अवतरण (छोटी)	१	१	१	-	-	-	-	-	-	१
७५	चिंतामणि	-	-	-	-	-	४०	-	-	-	-
७६	बाल संस्कार	५	५	५	-	-	-	५	६	५	६
७७	सद्गुरुने श्रद्धांजलि	-	२	-	-	-	-	-	-	-	-
७८	एकादशी व्रत कथाएँ	५	५	५	-	-	-	५	-	-	-
७९	गुरुपूर्णिमा संदेश	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-
८०	भगवन्नाम जप-महिमा	५	५	५	-	-	-	५	-	-	५
८१	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी	४	४	४	-	-	-	-	-	-	-
८२	ज्ञानी की गति ज्ञानी...	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-
८३	[illegible]	५	५	५	-	-	-	-	-	-	-
८४	हमारे आदर्श	६	६	६	-	-	-	-	६	-	-
८५	सागर में सागर	४	४	४	-	-	-	-	-	-	-
८६	आरोग्यनिधि-२	११	१५	-	-	-	-	-	-	-	-
८७	श्रीनारायण स्तुति	५.५	५	५.५	-	-	-	-	-	-	-
८८	[illegible] (सचित्र)	१२५	१२५	१२५	-	-	-	-	-	-	-
८९	बा.सं.के. - एक कदम	१	१	१	-	-	-	-	-	-	-
९०	[illegible]	१७	१८	-	-	-	-	-	-	-	-
९१	संस्कार सिंचन	२	२	३	-	-	-	-	२	-	-
९२	जीवनोपयोगी कुंजियाँ	२	२	३	-	-	-	-	-	-	-
९३	संस्कार सेवन अभियान	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-

अन्य प्रकाशन : ✻ बंगला : (१) यौवन सुरक्षा - रु. ३ (२) ईश्वर की ओर - रु. ४
✻ मलयालम : (१) श्रीगुरुगीता - रु. ५ (२) महान नारी - रु. ५
✻ तमिल : (१) यौवन सुरक्षा - रु. ४ ✻ उर्दू : (१) मज़्क मुसाफिर - रु. ३

आश्रम के प्रकाशन 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, 'लोक कल्याण सेतु' समाचार पत्र, 'दरवेश दर्शन' सिंधी पत्रिका तथा साहित्य आदि के लिए संपर्क

संत श्री आसारामजी आश्रम के पते एवं फोन : संत श्री आसारामजी आदिवासी कल्याण आश्रम, सेलवासा (दादरानगर हवेली), (०२६०) २६४१८०० **गुजरात** : साबरमती, अमदावाद : २७५०५०१०-११ ★ जहाँगीरपुरा, सूरत : २७७२२०१-२. ★ बलवंतपुरा, खेड तसीया रोड, हिंमतनगर: २३२०९९. ★ सिंधुनगर, भावनगर मु. बुधेल, लाखणका डेन के पास : (०२७८) २८८३२७३ ★ ★ न्यारी डेम के पास, कालावड रोड, राजकोट. : २७८३३५४, २७८३३७०, २७८३३७१. ★ लुणावाड़ा, मु. काकचिया, मही नदी त्रिवेणी संगम, जि. पंचमहाल. : (०२६७४) २५११९२. ★ वीलगाम, पादरा रोड, वडोदरा. : २६८०८४४, २६८०७४४. ★ डुँगरा, सेलवास रोड, वापी : २४५१५४१. ★ भेटासी, जि. आणंद. : (०२६९६) २८४७८७. ★ केसरपुरा कम्पा, पो. मदापुर कम्पा, ता. मोडासा. : (०२७७४) २४६३८७. ★ भैरवी, जि. वलसाड. : (०२६३४) २२०७८५. ★ पिसनगर, कड़ा रोड, जि. मेहसाना. : (०२७६५) २२०३६६ ★ संत श्री लीलाशाहजी आश्रम, डीसा. ★ संत श्री आसारामजी साधना कुटीर, पाली हिल-२, तीथल रोड, वलसाड. : (०२६३२) २५५६२०. ★ संत श्री आसारामजी आदिवासी कल्याण आश्रम, सरसवा (पूर्व), ता. संतरामपुर, जि. पंचमहाल. ★ जाफराबाद, गोधरा: २४७७७८. ★ विरमगाम. : (०२७१५) २३३१६२ ★ बायड. : (०२७७९) २२०६३०. ★ पीयाज रोड, कलोल. : (०२७६४) २२७९९५. ★ नागेश्वर तालाब के सामने, रापर. : (०२८३०) २२१४३३. ★ जाफरपुरा, बोरीयावी रोड, वकलासी. : (०२६८) २५८०४७५. ★ त्रिवेणी ब्रिज के पास, धोबी घाट, जूनागढ़. : (०२८५) २६२९५९७. ★ मेहसाना. : (०२७६२) २४९४२२ ★ धराद, जि. बनासकाठा. : (०२७३७) २२२६०२. ★ लिम्बडी (सुरेन्द्र नगर). : (०२७५३) २६२१८७. ★ बारडोली : २२२४२८. ★ **राजस्थान** : पंचकुंड, पुष्कर, जि. अजमेर. : (०१४५-२) २७७२१३९ ★ आमेट, जि. राजसमंद. : (०२९०८) २३०९००. ★ गौरेश्वर महादेव, बडा दीवड़ा, सागवाड़ा, जि. डूँगरपुर. : (०२९६६) २३४२४०. ★ मु. पाल, जोधपुर : २७४२५००. ★ डभोक, उदयपुर. : (०२९४) २६५५६१२. ★ सुमेरपुर, स्टेशन रोड, जि. पाली. : (०२९३३) २५८३७१. ★ लखावा, कोटा. : २४९०७५०. ★ महाकालेश्वर रोड, सरमथुरा, जि. धौलपुर. : (०५६४६) २३०२३२. ★ बांरा. : (०७४५३) २३५४३५. ★ नई मण्डी, सर्क्यूलर रोड, भरतपुर. : (०५६४४) २३२३८८. ★ उतरलाई रोड, बाडमेर. : (०२९८२) २२७२४१. ★ सुभाष नगर विस्तार योजना, भीलवाडा. : (०१४८२) २५२६५२. ★ निवाई गौशाला. : (०१४३८) २२२५४०. ★ **मध्य प्रदेश** : बाय पास रोड, गाँधीनगर, भोपाल. : २७४२५००, २७१३०५५. ★ शक्ति हाऊस, परासिया रोड, छिन्दवाड़ा. : २४२०६६. ★ खजरी, छिन्दवाड़ा. : (०७१६२) २३८५७७, २३८८०२. ★ सेमल्दा रोड, मनावर, जि. धार. : २३३३००. ★ राणापुर, जि. झाबुआ. : (०७३९२) २८३६३८. ★ मांगल्य मंदिर, रतलाम. (०७४१२) २६००२२, २६००१२. ★ पंचेड़, नामली, जि. रतलाम. २६९२६३, २६९१०३. ★ पी. आई. पी. रोड, रायपुर : २४४३५३४ ★ खंडवा रोड, बिलावली तालाब के पास, इन्दौर. : २४७८०३१, २४६११९८. ★ शिवपुरी रोड, केदारपुर कोठी, ग्वालियर. : २३३५८८८. ★ सांदीपनि आश्रम के पास, मंगलनाथ रोड, उज्जैन. : २५८०१४९, २५५५५५२. ★ बडगाँव. : २६३२७५. ★ लम्हेटा घाट रोड, जबलपुर. : (०७६१) २८७४४५६. ★ जामगोद, देवास. : (०७२७२) २८७४४५६. ★ गिरदोडा, नीमच. : (०७४२३) २६०७३७. ★ ब्यौहारी. ★ पचमढ़ी रोड, पिपरिया. : (०७५७६) २२४६६०. ★ **महाराष्ट्र** : मुलेगाँव, सोलापुर (०२१७) २९११०३०. ओ. टी. सेक्शन, उल्हासनगर. : (०२५१) २५४२६९६, २५६३८८१. ★ प्रकाशा, जि. नंदुरबार. : (०२५६५) २४०२७५. ★ नासिक : (०२५३) २३४५४४० ★ नागपुर. : (०७१२) २६६७२६७, २६६७२६८. ★ सर्वे नं. ३२, हिमायतनगर, बेगमपुरा, औरंगाबाद. : (०२४०) २४००९९९. ★ हरि ॐ मार्ग, पार्वती घाट, गोंदिया. : (०७१८२) २२१८८८ ★ गोरेगाँव, मुंबई. : २६८६४१४३-४४. ★ साक्री रोड, धुलिया. : (०२५६२) २०२०००. ★ भुसावल. : (०२५८५) २६५१३३. ★ बदलापुर, जि. थाने. : (०२५१) २६९०५९६. ★ डोंडाइचा. : (०२५६६) २४६२९९. ★ **उत्तर प्रदेश** : हापुड (०१२२) २३००४८८. ★ पी.ए.सी. बटालियन के पीछे, कानपुर रोड, लखनऊ. : (०५२२) २५०७११०. ★ सिंधी कुटिया, गाँधी मार्ग, वृंदावन. : (०५६५) २४४३२६२. ★ आगरा मथुरा रोड, आगरा : (०५६२) २६४१७७०, २६४२०१६. ★ गाजियाबाद : (०१२०) २८७०८७०, २८७०४९०. ★ उझानी (०५८३२) २६५८११. ★ रुडकी रोड, मुजफ्फरनगर. : (०१३१) २४४२७३५ ★ वाराणसी : (०५४२) २२१३७८१. ★ झांसी : (०५१७) २४४६६८१. ★ गोन्डा : (०५२६२) २३६६४९. ★ मेरठ-I (०१२१) २६३२६३२. मेरठ-II : (०१२१) २५२९०१६. ★ कानपुर : (०५१२) २०७५१२०. ★ **हरियाणा-पंजाब** : गाँव स्यूंक, तह. खरड, जि. रोपड, चंडीगढ़. : (०१७२) २७८५८७८. ★ कुँजपुरा रोड, करनाल. : (०१८४) २२६६१११, २२६६६११. ★ डाडोला गाँव, पानीपत. : (०१७४२) २६६०२०२. ★ साहनेवाल गाँव, नहर के पास, लुधियाना. : (०१६१) २८४४८७५, २८४५८७५. ★ दिडबा मंडी. : (०१६७६) २४४१००. ★ न्यू सोढाल नगर, जालंधर. : (०१८१) २७९५५९६. ★ गाँव कलेर-रामतीर्थ, अमृतसर. : (०१८५८) २६२००१. ★ फाजिल्का. : (०१६३८ २६१५८९) ★ कमालपुर, रेवाडी. : (०१२७४) २६९७१६ ★ बंगला रोड, हिसार. : (०१६६२) २७५१२१. ★ तोपखाना, पंजोखरा रोड, जनेतपुर गाँव, अंबाला. : (०१७१) २६७९०५८, २६७९६५८. ★ बोहर गाँव, रोहतक. : (०१२६२) २२०३५३. ★ बहादुरगढ़ : (०१२७६) २६०४५६. ★ फरीदाबाद : (०१२९) २५४८०८००. ★ हेमा माजरा (अंबाला) : (०१७३१) २७४१७९. ★ मांडी इसराना : (०१७४२) ५८४८९८. ★ **दिल्ली** : वंदे मातरम् रोड, रवीन्द्र रंगशाला के सामने. : २५७२९३३८, २५७६४१६१. ★ **उत्तरांचल** : ★ सप्त सरोवर, हरिपुर कला, हरिद्वार. : (०१३३) ४२६१२५९. ★ डाण्डा धोरन, सहस्रधारा रोड, देहरादून. : (०१३५) २७८०८७० ★ नई टिहरी. : (०१३७६) २३२९५९. ★ ऋषिकेश : (०१३५) २४३४०८३. ★ **पश्चिम बंगाल** : ★ धरिया स्टेशन, कोलकाता. : (०३३) २४३६७२०६, २४३६७२८०. ★ **आंध्रप्रदेश** : ★ शमशाबाद रंगारेड्डी, हैदराबाद. : (०८४१३) २२२१०३ ★ **उड़ीसा** : ★ काठजोड़ी नदी के पास, सी.डी.ए. रिंग रोड, कटक. : (०६७१) २३६०३४२ ★ **जम्मू-कश्मीर** ★ कठुआ. : (०१९२२) २८५३२२ ★ **विदेश** में : मेटाचन (यू. एस. ए.) : ००१-७३२-४४१९८२२ फेक्स : ७३२-५८३-०३२३ इन्टरनेशनल श्री योग वेदान्त सेवा समिति के फोन : टोरन्टो : ९०५-४६६-४४८६ ★ लंदन : १८१-५५१-८१८६ ★ बोस्टन : ६१७-२३३-२०७३, ५०८-२५०-०५२४. ★ शिकागो : ८३०-२९३-८४१२, ६३०-६३०-९३३७ ★ कैलिफोर्निया : ३१०-८०२-१६६८ ★ हाँगकाँग : ८५२-२८५-८०४८८. ★ दुबई : ५३६९७३-५२११०९ ★ नेपाल : वीरगंज : ०७१-२५५१९४, ०७१-२६१३६ नेपालगंज : ०७७०-८१-२५३११, २०६४०

गुरु-पूजन

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रततपः क्रियाः ।
ताः सर्वा सफला देवि गुरुसंतोषमात्रतः ।।

'हे देवी ! कल्पपर्यन्त के, करोड़ों जन्मों के यज्ञ, व्रत, तप और शास्त्रोक्त क्रियाएँ, ये सब गुरुदेव के संतोषमात्र से सफल हो जाते हैं।'

ऐसे महिमावान श्री सद्गुरुदेव के पावन चरणकमलों का षोडषोपचार से पूजन करने से साधक-शिष्य का हृदय शीघ्र शुद्ध और उन्नत बन जाता है। मानस पूजा भी इस प्रकार कर सकते हैं :

मन ही मन भावना करो कि हम गुरुदेव के श्रीचरण धो रहे हैं... सप्ततीर्थों के जल से उनके पादारविन्द को स्नान करा रहे हैं। खूब आदर एवं कृतज्ञतापूर्वक उनके श्रीचरणों में दृष्टि रखकर... श्रीचरणों को प्यार करते हुए उनको नहला रहे हैं... उनके तेजोमय ललाट में शुद्ध चन्दन का तिलक कर रहे हैं... अक्षत चढ़ा रहे हैं... अपने हाथों से बनाई हुई गुलाब के सुन्दर फूलों की सुहावनी माला अर्पित करके अपने हाथ पवित्र कर रहे हैं... हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर अपना अहंकार उनको समर्पित कर रहे हैं... पाँच कर्मेन्द्रियों की, पाँच ज्ञानेन्द्रियों की एवं ग्यारहवें मन की चेष्टाएँ गुरुदेव के श्रीचरणों में समर्पित कर रहे हैं...

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद् यद् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ।।

'शरीर से, वाणी से, मन से, इन्द्रियों से, बुद्धि से अथवा प्रकृति के स्वभाव से जो-जो करते हैं वह सब समर्पित करते हैं। हमारे जो कुछ कर्म हैं, हे गुरुदेव ! सब आपके श्रीचरणों में समर्पित हैं। हमारा कर्त्तापन का भाव, हमारा भोक्तापन का भाव आपके श्रीचरणों में समर्पित है।'

इस प्रकार ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु की कृपा को, ज्ञान को, आत्मशान्ति को हृदय में भरते हुए उनके अमृतवचनों पर अडिग बनते हुए अन्तर्मुख होते जाओ... आनन्दमय बनते जाओ...

ॐ आनंद ! ॐ आनंद !! ॐ आनंद !!



केवल जलमय तीर्थ ही तीर्थ नहीं कहलाते और केवल मिट्टी या पत्थर की प्रतिमाएँ ही देवता नहीं होतीं। संत पुरुष ही वास्तव में तीर्थ और देवता हैं, क्योंकि तीर्थ और प्रतिमा का बहुत समय तक सेवन किया जाय, तब वे पवित्र करते हैं परन्तु संत पुरुष तो दर्शनमात्र से ही कृतार्थ कर देते हैं। अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, वाणी और मन के अधिष्ठातृ देवता उपासना करने पर भी पाप का पूरा-पूरा नाश नहीं कर सकते, क्योंकि उनकी उपासना से भेदबुद्धि का नाश नहीं होता, वह और भी बढ़ती है। परन्तु यदि घड़ी-दो-घड़ी भी ज्ञानी महापुरुषों की सेवा की जाय तो वे सारे पाप-ताप मिटा देते हैं, क्योंकि वे भेदबुद्धि के विनाशक हैं। (श्रीमद् भागवत)

संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अमदावाद-५